रोटरी समाचार

विषय सूची

खंड. २४ अप्रैल २००७ सं.१०

भारत, बाँगलादेश, नेपाल व श्रीलंका के लिए प्रादेशिक पत्रिका

रूपक

6 आपकी जबान से

7 संपादकीय

11 मेरी जगह से

19 मंडल रोटरी फाउन्डेशन एलुम्नाय एसोसिएशन: अक्सर पूछे गये सवाल

36 मार्गदर्शन करना

42 पी आर आई डी सुशील गुप्ता को पद्मश्री

44 राहला: प्रशिक्षित हुये नेतागण

46 पोलियो प्लस: दोगुना जोश के साथ

48 संस्कृति: देदीप्यमान पर्वत

52 रोटेशिया: सरहद पार सहोदर

56 सीमा पार की साँझेदारी

58 पानी के मुसाफिर

62 रोटरी महा कक्ष

64 रोटरी व राऊंड टेबल: एक गहन साँझेदारी

67 पुस्तक समीक्षा

68 मार्गदर्शन करना

76 स्वास्थ्य रक्षा

78 क्लब सेवा

79 समाचार कक्ष

82 बच्चों के लिये!

रोटरी संसार

9 अध्यक्ष का संदेश

12 पानी पानी हर कहीं, पीने को एक बूंद भी नहीं

20 चेयरमॅन के विचार

22 सदस्यता: प्रतिधारण

25 फोकस में: 'मेक अप' बैठक के लिये हम पाँच बडे क्लब

यह जरूरी नहीं कि लेखकों के मत, संपादकों, रोटरी न्यूज ट्रस्ट के न्यासियों तथा रोटरी इंटरनेशनल के मत से मेल खाते हो। पत्रिका की विषय वस्तु बिलकुल सही हो इस बात की पूरी कोशिश की जायेगी। समाचार अच्छे उद्देश्य से ही प्रकाशित किये जाते है, लेकिन किसी प्रकार की भूल-चूक की वजह से उत्पन्न हानि या असुविधा की जिम्मेदारी नहीं ली जायेगी। विज्ञापन, अंकित मूल्य के आधार पर ही स्वीकार किये जायेंगे और विज्ञापन दाताओं की गलतियों के लिए हम जिम्मेदारी नहीं उठा पायेंगे। संपादक, आपके लेखों, समाचार-सामग्रियों, तस्वीरों, तथा खतों का स्वागत करते हैं, लेकिन बिन माँगी सामग्रियों को प्रकाशित करने में हम बाध्य नहीं है। स्पष्टता अथवा जगह के अनुरूप संपादन करने का हक, संपादक रखते है। लेख भेजनेवालों को इस बात को सुनिश्चित कर लेना होगा कि जो सामग्रियाँ भेजी गयी है उनके प्रकाशनाधिकार का उल्लंघन ना किया गया हो और इस प्रकार की कोई सामग्री भेजी भी गयी हो तो उसके उद्धरण के लिए जरूरी लिखित अनुमति प्राप्त कर लिया गया हो।

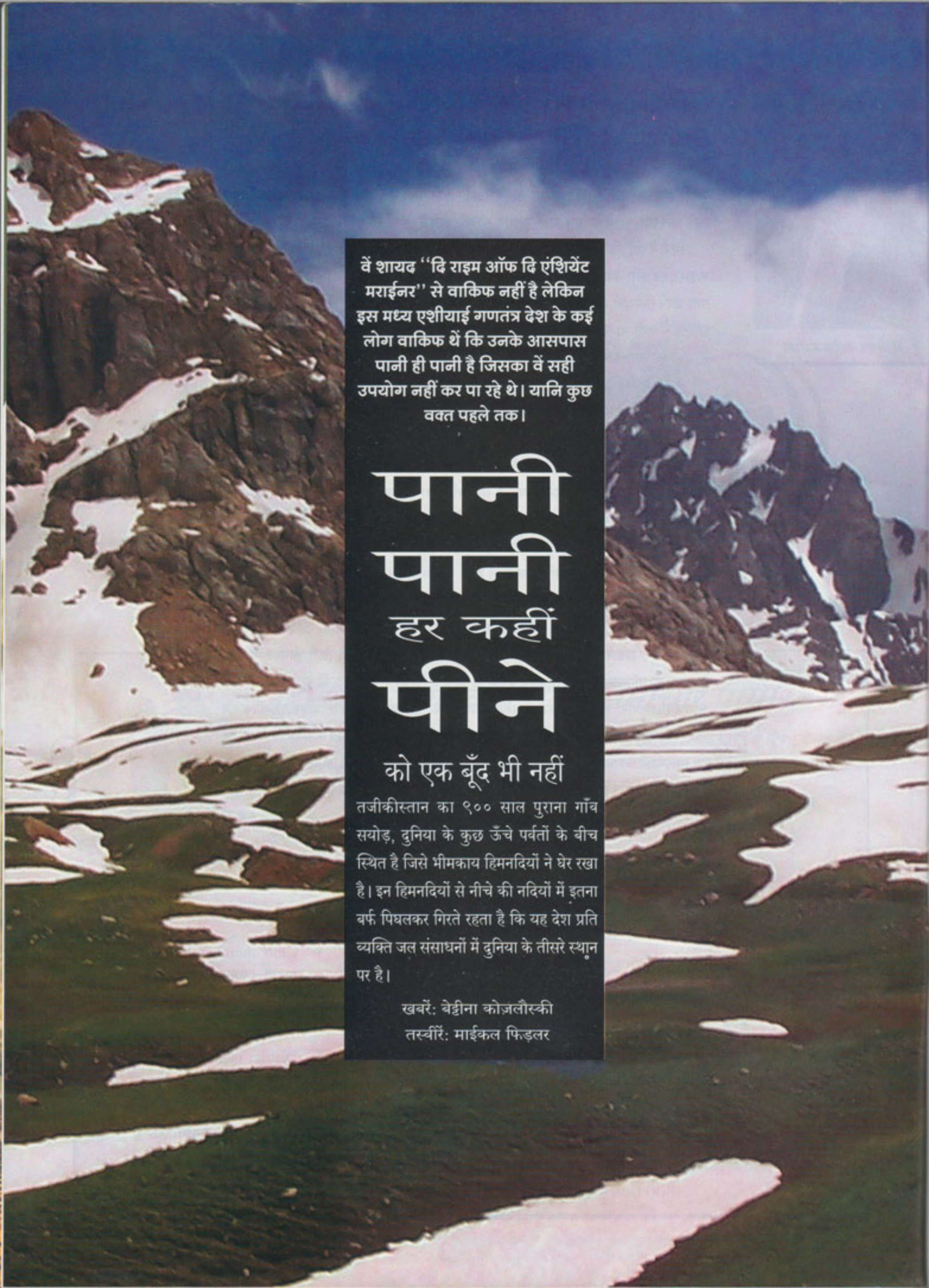

वें शायद ''दि राइम ऑफ दि एंशियेंट मराईनर'' से वाकिफ नहीं है लेकिन इस मध्य एशीयाई गणतंत्र देश के कई लोग वाकिफ थें कि उनके आसपास पानी ही पानी है जिसका वें सही उपयोग नहीं कर पा रहे थे। यानि कुछ वक्त पहले तक।

पानी पानी हर कहीं पीने

को एक बूँद भी नहीं

तजीकीस्तान का ९०० साल पुराना गाँव सयोड़, दुनिया के कुछ ऊँचे पर्वतों के बीच स्थित है जिसे भीमकाय हिमनदियों ने घेर रखा है। इन हिमनदियों से नीचे की नदियों में इतना बर्फ पिघलकर गिरते रहता है कि यह देश प्रति व्यक्ति जल संसाधनों में दुनिया के तीसरे स्थान पर है।

खबरें: बेट्टीना कोज़लौस्की
तस्वीरें: माईकल फिड़लर

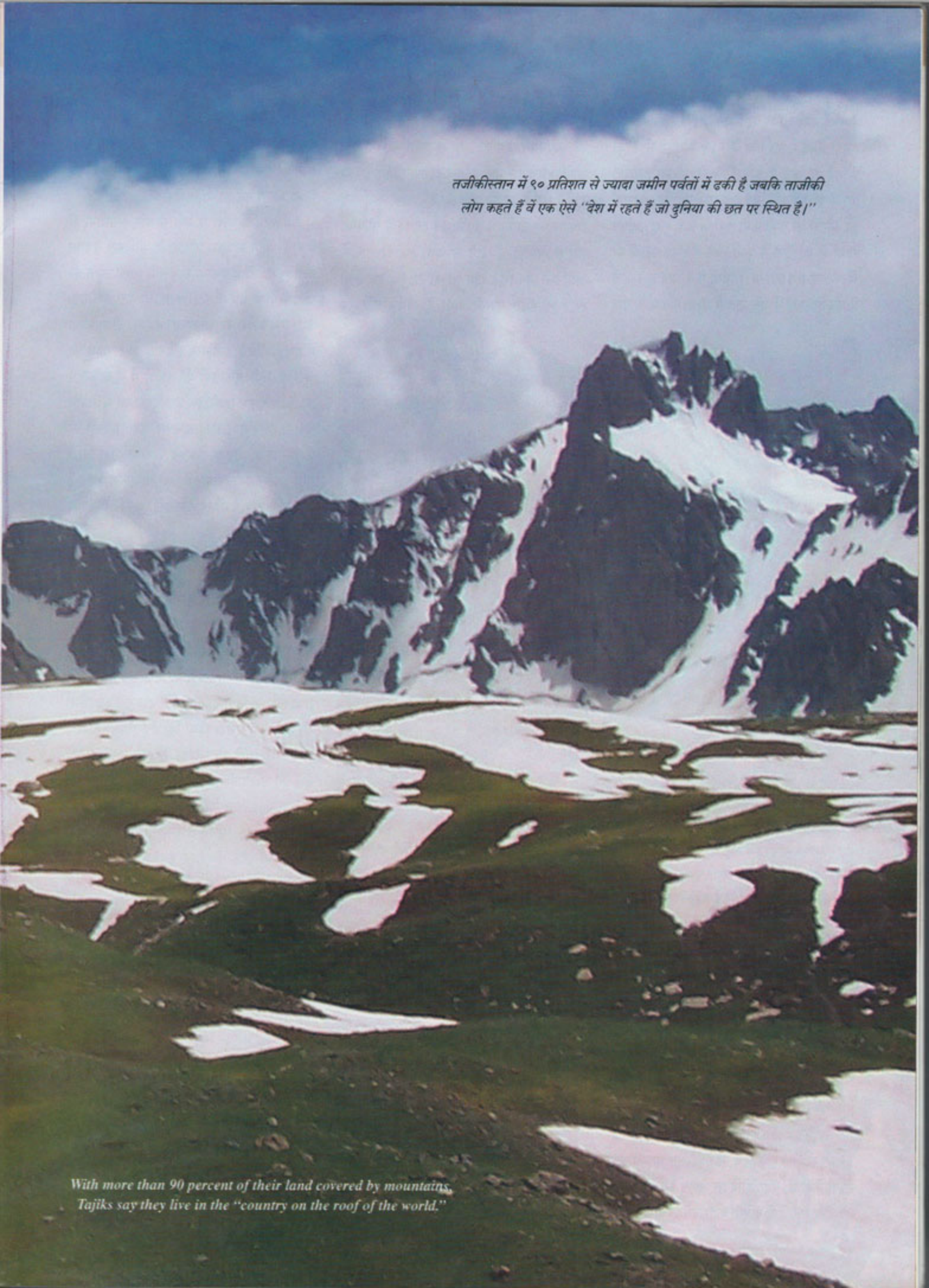

तजीकीस्तान में ९० प्रतिशत से ज्यादा जमीन पर्वतों में ढकी है जबकि ताजीकी लोग कहते हैं वें एक ऐसे "देश में रहते हैं जो दुनिया की छत पर स्थित है।"

With more than 90 percent of their land covered by mountains, Tajiks say they live in the "country on the roof of the world."

अभी, कुछ साल पहले, सयोड मीलों तक फैली बंजर जमीन पर स्थित था। तजीकीस्तान के हजारों लोगों में इस गाँव के ६४० निवासी भी हैं जो ऊँचाई पर रहते हैं लेकिन जिनके परिवारों, पालतु पशुओं या जमीन के लिये साफ पानी नहीं मिलता। यहाँ की औरतों को कभी कभी गर्धों के साथ कुछ प्रदूषित झरनों से बाल्टियों में पानी भरने रोजाना, पहाडों पर चढ़कर जाना पडता था। गर्मियों में यें झरने सूख जाते थें जब कि जाडे में जम जाते थे। कुछ गाँव वाले, गाँव में बहने वाली खाइयों में बरसात का पानी भर लेते थे। लेकिन उस पानी में आस पास के खेतों से बहकर आने वाला खाद और पशुओं का गोबर मिला हुआ था जिससे खतरनाक बॅक्टेरीया पैदा हो जाता था और पेट दर्द, टाईफॉइड या हेपाटीटीस ए भी हो जाता था।

देश की राजधानी दुशान्बे में दूषित पानी बह रहा है (ऊपर); बाढ़ के पानी से होकर गुजरते हुये गाँववालों की जान खतरे में (ऊपरी दायाँ); तंग घाटी के पार १,२०० फीट नीचे की ओर झूलती हुये नव प्रतिष्ठापित प्लास्टिक पाइपलाईन का निरीक्षण करते हैं रोटेरियन्स्, CARE के इंजीनियर्स तथा गाँववाले (निचला दाया)।

सयोड तथा इस देश का शेष भाग हमेशा ही ऐसे नहीं था।

सोवियत समाजवादी गणतंत्र देश होने के नाते १९२९ से १९९१ के बीच, तजीकीस्तान हायड्रो पावर टॅक्नोलोजी में, बडा सोवियत लागत स्थल बन गया था, और नतीजे में दुनिया का सबसे ऊँचा बाँध यहाँ बनाया गया। यह बाँध अफगानीस्तान के पास बना १,००० फुट ऊँचा न्यूरेक डेम है।

सोवियत अर्थ व्यवस्था से इस एक जमाने के आदिवासी देश में भारी बदलाव देखा गया जहाँ १९ वी सदी में रूस के अधीन आने से पहले अरब, तुर्की तथा अफगान का शासन चला। लेकिन १९९१ में सोवियत संघ से आजाद हो जाने के बाद, तजीकीस्तान में असैनिकी जंग छिड गया था जो १९९७ तक जारी रहा। सोवियत शासन काल के समय की जल व्यवस्थायें या तो नष्ट हो गयी या उपेक्षित रही जब कि पुराने पाइपलाईन अपरदित हो गये।

युनायटड नेशन्स् डेवलपमेंट प्रोग्राम के मुताबिक नयी सहस्त्राब्दि की शुरुआत के साथ देश की ग्रामीण आबादी के केवल २० प्रतिशत को पाईप से पानी मिलता था।

पानी के लिये फ्लोरीडा रोटेरियनों की पुकार

सात मिलियन तजीकी लोगों में से दो तिहाई के लिये खेती बाडी या पशु पालन ही जीने का जरिया है। इसलिये पानी के अभाव से देश में गरीबी आ गयी।

जिस वक्त फ्लोरीडा विश्वविद्यालय के भूतपूर्व प्रोफसर रोटेरियन जॉन कापेस ने उजबेकीस्तान से एक मेहमान प्रोफसर की मेजबानी की थी उस वक्त तजीकीस्तान की जल समस्याओं को युनायटेड स्टेट्स् में अहमियत नहीं दी जाती थी।

मेहमान प्रोफसर ने बर्फ से ढके संसाधनों से पानी ले आने में मध्य एशिया के सोवियत गणतंत्र देशों के पहाडी इलाकों में रहने वाले लाखों लोगों की परेशानियों के बारे में रोटरी क्लब, ला बेली, फ्लोरीडा के सदस्य कापेस को, बतलाया। कापेस, जो आफ्रीका में हाइड्रोलॉजिक इंजीनियर की हैसियत से काम कर चुके थें, नयी चुनौतियों की तलाश में थें लेकिन वे उजबेकीस्तान में राजनैतिक अशाँति के बारे में चिंतित थे। सो, उन्होंने तजीकीस्तान पर अपने प्रयासों को फोकस किया जो एक अर्धचंद्र के आकार का देश है और अफगानीस्तान तथा चीन को सीमांकीत करता है जिसका वैश्विक पदचिन्ह, अमरीकी राज्य विसकॉन्सीन से थोड़ा छोटा है।

प्यासों को पानी

कापेस, फ्लोरीडा में इंटेलीजेंशिया इंटरनेशनल का संचालन कर रहे थें जो रोटरी से सहायता प्राप्त, विश्व व्याप्त एक इंटर्नशिप कार्यक्रम है जिसे उन्होंने इंजीनियरिंग छात्रों के लिये शुरु किया था। तजीकीस्तान के गाँवों की प्यास बुझाने की कोशिश में, कापेस ने सुझाव दिया कि जेक रिपब्लिक तथा तजीकीस्तान से आये उनके दो भूतपूर्व इंटर्नों को देश की राजधानी दुशान्बे जाने को कहें जहाँ उन्हें मौजूदा जल आधारिक संरचना के बारे में आधार सामग्री तथा एक सुधारित नीला नक्शा तैयार करना होगा। "मैं और चंद छात्र हजारों लोगों तक पानी ले आना चाहते थे" कहते हैं कापेस, जो अब तक तजीकीस्तान गये ही नहीं है।

लेकिन इन दो भूतपूर्व इंटर्नों ने खुद को केवल नीला नक्शा डिजाइन करने तक ही सीमित नहीं रखा। उन्होंने CARE नामक लाभ निरपेक्ष संस्था तथा USAID के साथ सहभागिता में पाईपलाईन बनवाई तथा उनकी मरम्मत करवाई जो पहाडी झरनों से इन गाँवों तक पानी ले आ सके। यह व्यवस्था सयोड तथा दुशान्बे के उत्तर में दो अन्य गाँवों में रहने वाले लगभग ३,५०० लोगों तक पहुँचायी जायेगी।

एक नये रोटरी देश का उदय

वहाँ फ्लोरीडा में, कापेस जानते थे कि रोटेरियनों के पास ऐसे कौशल और संसाधन थे जो कामयाब होने

में परियोजना प्रबंधकों की मदद कर सकते थें। लेकिन तजीकीस्तान में कोई क्लब नहीं था सो, उन्होंने इन भूतपूर्व इंटर्नों से दुशान्बे के एक दल में जाकर शामिल होने को कहा जो देश में प्रथम रोटरी क्लब को गठित करने की कोशिश में थें।

एक बार अप्रैल २००५ में, रोटरी क्लब दुशान्बे का चार्टर हो गया, क्लब ने दूसरे अमरीकी क्लबों के साथ मिलकर परियोजना के लिये काम करना शुरू किया। रोटरी क्लबों तथा मंडलों ने लगभग ५,६०० अमरीकी डॉलरों का अंशदान दिया जब कि फाउन्डेशन ने लगभग ४,९०० डॉलर देकर मदद की। CARE ने लगभग १२,३०० डॉलर्स दिये और तजीकीस्तान के श्रोतों से लगभग १०,३०० अमरीकी डॉलर्स इकट्ठा किये गये।

अपने खेत में काम करती हुयी औरत (ऊपर); रोटेरियनों द्वारा प्रतिष्ठापित नयी जल व्यवस्था की मदद से प्रचुर मात्रा में उगायी गयी सब्जियों के साथ एक परिवार बाजार जा रहा है (बायें)।

शुरू से ही, स्थानीय लोगों ने एक अहम भूमिका निभायी। उन्होंने हर एक गाँव के ऊपर पहाडी झरनों में जलग्रह नालियाँ और सीमेंट के जलनिकास क्षेत्र बनवाये। उन्होंने गड्ढे खोदें जिसमें से तीन नये प्लास्टीक पाईप, छाने गये पानी के साथ नालियो में बने स्टोरेज टंकियों में पहुँच पाते थें। (एक पाईप तो एक तंग घाटी के पार १,२०० फीट तक झूलती हुयी गयी)। क्यों कि उन्होंने पानी ले जाने में पंप के बजाय प्राकृतिक बल का उपयोग किया इस नयी व्यवस्था के लिये बिजली की जरूरत नहीं रही। इसके बाद स्टोरेज टंकियों से इन तीन गाँवों में कई सामुदायिक टोंटियों में पानी ले जाने गाँववालों ने पाईप लगायें। रोटेरियनों, CARE तथा USAID ने पानी के वितरण का निरीक्षण तथा इन

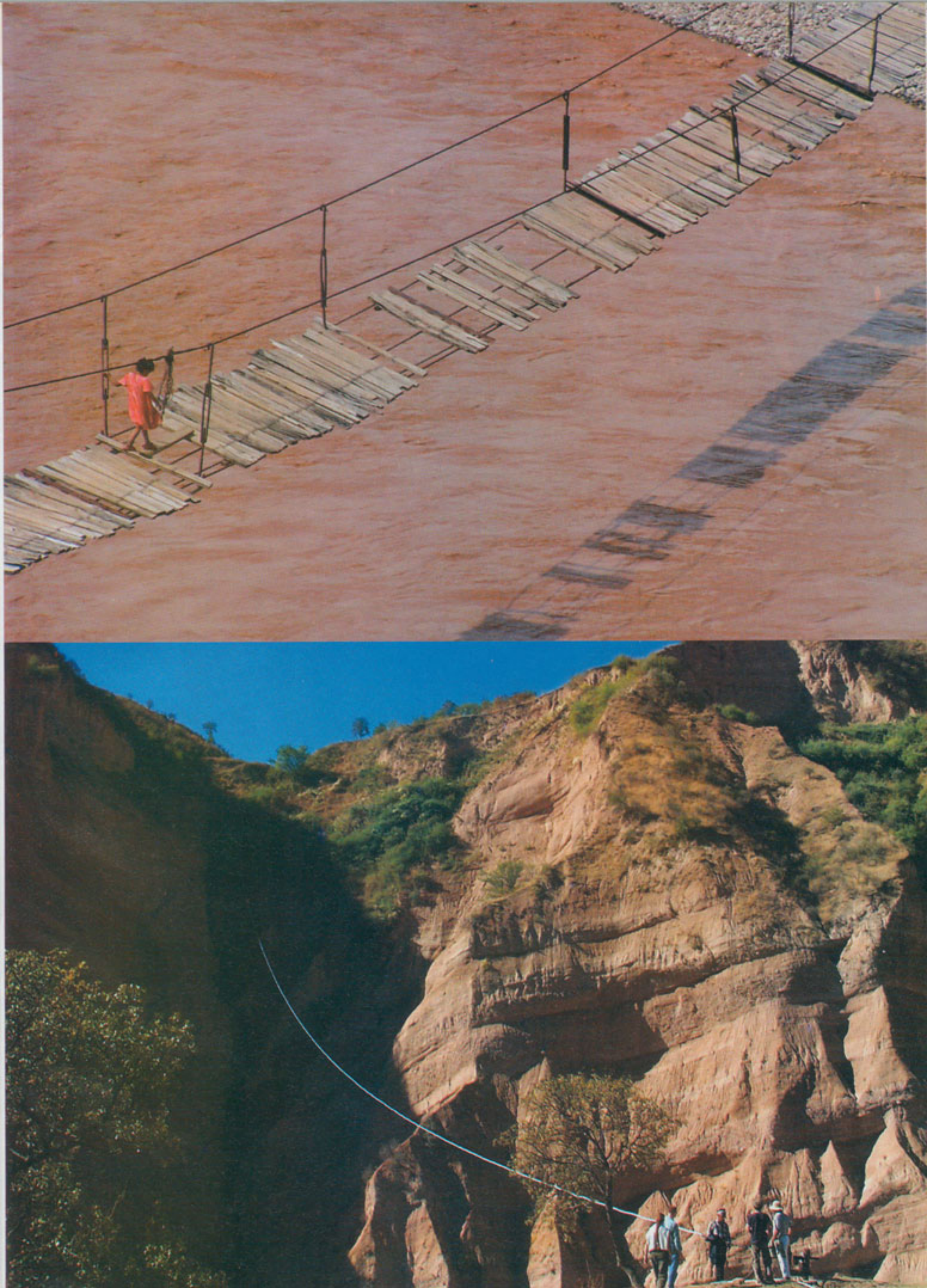

एक तजीकी परिवार अपने समुदाय तथा उन रोटेरियनों की अच्छी सेहत के लिये 'टोस्ट' (सलामती का जाम) उठा रहे हैं, जिन्होंने एक साफ पानी परियोजना के जरिये बीमारियों को दूर करने में मदद की थी।

व्यवस्थाओं के रखरखाव के लिये शुल्क इकट्ठा करने एक स्वायत्त जल परिषद का गठन कर, उसे प्रशिक्षित करने में प्रत्येक गाँव की मदद की।

अप्रैल २००६ में, कापेस तथा तजीकीस्तान में उनके सहकर्मियों ने इसी प्राकृतिक बल से प्रेरित प्रक्रिया का उपयोग कर नौ अन्य तजीकी गाँवों में लगभग १२,००० लोगों तक साफ पीने का पानी ले आने की योजना बनायी। इस बार, उन्होंने फ्लोरीडा तथा इंडियाना के १९ अमरीकी रोटरी क्लबों तथा मंडलों से ३६,२०० अमरीकी डॉलरों का अंशदान इकट्ठा किया। फाउन्डेशन ने ३३,७०० डॉलर्स दिये जब कि CARE ने २५,००० डॉलर्स दिये।

स्थानीय लोगों ने इस परियोजना को कामयाब मानकर सराहा है क्यों कि इससे १५,००० तजीकी लोगों को ताजा पानी मिल पाया है। सयोड़ में उन्ही जगहों में गाँववालों ने नाशपाती, गेहूँ, कूट्, आलू, गाजर तथा अन्य सब्जियों के पौधे रोपे या बीज बोये हैं जहाँ कुछ वक्त पहले बहुत कम उगाते थें कि खुद का पेट भरना भी मुश्किल हो जाता था। अब कइयों ने दुशान्बे के बाजारों में अपने उत्पादनों को बेचना शुरु कर दिया है। चूजें, बकरियाँ, गाय-भैंसों को खरीदने में अपनी अतिरिक्त कमाई का उपयोग करते हैं। फिर उससे मिले अंडों और दूध को बेचते हैं।

"सयोड का एक भी निवासी ऐसा नहीं है जो इस नयी अर्थ व्यवस्था में हिस्सा ना लेता हो," कहते हैं अब्दुकयम करीमोव, जो इस गाँव के शिक्षक, प्रधानाध्यक तथा अध्यक्ष है। वें अपने स्कूल की खिड़कियों से झाँककर घाँस और पेडों को पनपते हुये देखते हैं। कुछ दिन, वें सेब और देवदार की पहली कली को खिलते हुये देखते रहते हैं। उनके २४० छात्रों ने भी कक्षा के बाहर, स्कूल के बागान में आलू और अंगूर के बीज़ बोये हैं।

आसानी से साफ पानी मिल जाने से, जल संक्रामित बीमारियाँ कम हो गयी है खासकर स्कूली बच्चों के बीच, जो अब अपने हाथ पैर धो सकते हैं और दर्दनाक पेट की बीमारियों से बच सकते हैं, कहते हैं करीमोव।

एक उजला भविष्य

यह जल परियोजना ताजे पानी के अलावा काफी कुछ ले आया है। उसने गाँव वालों को एक मकसद दिला दिलाया है।

"जब मैं इनमे से एक गाँव गया तो मैंने आदमियों को अपनी जमीन पर काम करते हुये देखा," कहते हैं दुशान्बे क्लब के सदस्य सबीना-मार्गरीटा जलेवा। "मैंने हरी जमीन देखी। मैंने हर किसी को व्यस्त देखा। इससे पहले, वे गाँव की जिंदगी से ऊबकर, राजधानी जाकर, बिना काम के प्लॅटफार्म पर उम्मीद खोकर बैठे रहते थे।"

करीमोव का कहना है कि पिछले बसंत के मौसम में उन्होंने तीन महीनों की जो कडी मेहनत की थी उसीका मुनाफा था साफ पीने का पानी। पाईपलाईन बनवाने में मदद करने अपने समुदाय के साथ वे आये हुये थें। उन्होंने पहाडी बाँध काम स्थानों में हाथ से रेत और पाईप के भाग लाकर रखें जब वह कार जिसे वे किसी से माँग कर ले आये थे, पहाड पर चढ़ ना सकी। "यह काम वाकई कठिन था," वें कहते हैं। "मैं ही बाँध काम का समन्वयक था जब कि मैंने ही जमीन खोदा और मैं ही पाईप ले आया। लेकिन अब मैं खुश हूँ। पानी के रहते हुये जिंदगी आसान बन जायेगी।"

बेट्टीना कोजलौस्की,
अंतर्राष्ट्रीय संपादिका
रो इ वर्ल्ड मॅगजीन प्रेस

अधिक जानिये
www.rotarywater.org.